

# Shri Ganesha Puja

Date : 31st December 1991  
Place : Kalwe  
Type : Puja  
Speech : Hindi & English  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 04
English	05 - 06
Marathi	-

### II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	07 - 07

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

आज हम लोग यहाँ पर पहले श्री गणेश, बाद में देवी की पूजा करने के लिए एकत्रित हुए हैं।

श्री गणेश को इस महाराष्ट्र में विशेषतः बहुत माना जाता है। यहाँ पर स्वयंभू अष्टविनायक है। अब लोग ये भी कह सकते हैं कि गणेश नाम की कोई चीज़ नहीं थी और ये भी कह सकते हैं कि ये स्वयंभू अष्टविनायक नहीं हैं। लेकिन जब आप लोग आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करते हैं, जब आप चैतन्य को प्राप्त करते हैं, तो आप पूछ सकते हैं कि क्या ये स्वयंभू है? क्या ये वास्तविक पृथ्वी तत्त्व ने बनायी चीज़ है?

गणेश के अनेक चमत्कार सहजयोग में हुए हैं। विशेषकर के हमारे फोटोग्राफ है, अगर आप उन्हें देख लीजिए तो हैरान हो जाइयेगा। किस तरह से उन्होंने अपने दर्शन दिए हुए हैं। गणेश की विशेषता ये है कि वो हर चक्र पर विराजमान हैं। सबसे पहले गणेश की ही स्थापना की जाती है और गणेश जो है वो पवित्रता को फैलाने के लिए संसार में हैं, जिससे कि पहले सारा संसार पवित्र हो जाए। सबसे बड़ी चीज़ है पवित्रता। अगर पवित्रता नहीं रहेगी तो कोई भी सृजन नहीं हो सकता। समझ लीजिए, अगर कोई पेड़ है और उसके आसपास का वातावरण दूषित हो जाएगा तो वो पेड़ मर जाएगा। इसी प्रकार इस सारी सृष्टि का जो वातावरण है, उसे पूर्णतया शुद्ध करने के लिए ही श्री गणेश की स्थापना की गयी थी। आजकल के इस वातावरण में लोग समझ नहीं सकते हैं कि पवित्रता चीज़ क्या है? और पवित्रता का अर्थ क्या है? यही गणेश आगे जाकर के आपके आज्ञा चक्र पर ईसा मसी के रूप से प्रकट हुए थे इसलिए ईसा मसी ने भी सबसे ज्यादा पवित्रता का महत्व बताया कि आपकी आँखें तक पवित्र होनी चाहिए, क्योंकि आज्ञा चक्र पर है। आँखों तक में पवित्रता होनी चाहिए। अगर आप की आँखों में पवित्रता नहीं है तो फिर आप किसी भी तरह से पवित्र नहीं माने जाएंगे। लेकिन इसका ये मतलब नहीं कि आप अपने से कहें की हम में वो खराबी है, ये खराबी है। किंतु श्री गणेश को अगर हम मानते हैं, पूजा करते हैं, तो उनके गुण भी हमारे अन्दर आने चाहिए।

पहला तो उनका गुण है पवित्रता। अब इस पवित्रता को हम कब, किस तरह से पा सकते हैं। कहने से नहीं हो सकता। किसी आदमी से कहा जाए कि तुम पवित्र हो जाओ, तो नहीं हो सकता। गंगाजल से नहाने से भी मनुष्य पवित्र नहीं हो सकता। तो ये पवित्रता आने के लिए क्या करना चाहिए? इस के लिए आपकी कुण्डलिनी का पहले जागरण होना चाहिए। जब जागरण हो जाएगा तभी समझना चाहिए कि धीरे-धीरे ये जो कुण्डलिनी है, ये सब चक्रों को स्वच्छ कर देगी। लेकिन वहाँ पर भी श्री गणेश जी का कार्य है क्योंकि ये चैतन्य है और वो चैतन्य स्वरूप श्री गणेश आप के हर चक्र को भी साफ करते रहते हैं। और अंत में जाकर के सहस्रार में भी श्री गणेश, आप जानते हैं, वो सदाशिव के गोद में बैठे हैं। ये जो भी चीज़ें हम लोगों को लगती हैं ये पौराणिक है, mythological है, इस सब की सत्यता सहजयोग में आप प्राप्त कर सकते हैं।

पहले आप को 'केवल सत्य' को प्राप्त करना चाहिए, absolute truth (एकमेव सत्य)। उसके बाद आप कोई भी सवाल पूछें, उसका जवाब सही मायने में आपके ऊँगलियों के उपर आ जाएगा। आप इससे जानेंगे कि सत्य क्या है? किसी भी चीज़ को कह देने से कि असत्य है, वो चीज़ असत्य नहीं होती। उसकी खोजबीन करनी चाहिए। ये बहुत गहरी चीज़ है और श्री गणेश का कार्य अत्यंत, अत्यंत गहरा है। और वो एक चिर बालक है। उनमें जो अबोधिता है, innocence है वो एक चिर बालक है, वो बालक स्वरूप है। क्राइस्ट ने कहा है कि if you have to enter into the kingdom of god, you have to become like children, इसका मतलब जो बच्चों में

निश्चल स्वभाव होता है वो हमारे अन्दर आना चाहिए। लेकिन वो जबरदस्ती करने से, या रोज का अभ्यास करने से नहीं आएगा। अगर आप जबरदस्ती करेंगे तो आपका अहंकार बढ़ जाएगा। अगर आप ये कहेंगे कि हम पापी हैं, हमने बड़े पाप किए हैं, हम बड़े खराब हैं तो आपका प्रति अहंकार बढ़ जाएगा। दोनों तरह से एक अलग बात हुई। तो उसके लिए करना क्या चाहिए ?

करना ऐसा चाहिए कि अपनी कुण्डलिनी का जागरण पहले करना चाहिए। कुण्डलिनी के जागरण से आप दूसरे आयाम में, उसके डायमेशन में उतरते हैं। उसके डायमेशन में उतरते ही धीरे-धीरे अन्दर से ही स्वच्छता होती रहती है। ये अनादिकाल से कुण्डलिनी आपके अन्दर स्थित है और ये उसी समय के इंतजार में है, उसी के लिए बैठी हुई है कि जिस वक्त आप को वो व्यक्ति मिल जाए, जो आपकी कुण्डलिनी का जागरण कर सके, क्योंकि ये आपकी माँ है और आपकी अपनी वैयक्तिक माँ है। वो आपके बारे में सब कुछ जानती है। और जिस प्रकार आप की माँ ने आपको जन्म देते वक्त सब तकलीफें खुद उठाई, वो कुण्डलिनी ही सारी तकलीफें उठा लेती है और आप इस आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त होते हैं। आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त होने के बाद आप को सिर्फ इतना करना है कि अपने इस योग को जो आपका परम चैतन्य के साथ हुआ है, उसके साथ एकात्मिता स्थापित करें।

चारो तरफ हम देखते हैं, फूल देखें कितने सुन्दर हैं। सृष्टि कितनी सुन्दर है, पर हम कभी सोचते नहीं कि ये कैसे बनीं ? इस को कौन बनाता है ? एक फूल के पौधे एक ही ऊँचाई तक बढ़ते हैं। कोई पेड़ एक ही ऊँचाई तक बढ़ता है। ये सारा कौन करता है ? इसे आपको पातंजलि में अगर आप देखने जाएं तो लिखा हुआ है कि 'ऋतंभरा प्रज्ञा'। इसका नाम ऋतंभरा रखा लेकिन यही ब्रह्मचैतन्य है, ये परम चैतन्य है जो चारो तरफ फैला हुआ है और जिसके लिए आदि शंकराचार्य ने बताया हुआ है कि 'सलीलं सलीलं'। ठण्डी ठण्डी हवा इसकी बह रही है। बाइबल में भी इसको 'कूल ब्रीज ऑफ द होली घोस्ट' कहा है। इस प्रकार की कुण्डलिनी हमारे अन्दर है और वो बिलकुल व्यवस्थित रूप से इसी इंतजार में है कि कब आप का पुर्नजन्म हो। अभी तक अमीबा से इस स्थिति में हम आ गए इन्सान बन गये। लेकिन इस से कोई न कोई उच्च स्थिति जरूर होनी चाहिए। अगर हम सत्य को प्राप्त किए होते तो आजकल के ये जो झगड़े हैं ये नहीं रहते। हम सब एक मन से, एक विचार से, एक सत्य के साथ जीते हैं। लेकिन ये जो झगड़े हो रहे हैं इसकी वजह यही है कि हम लोगों ने अभी तक उस केवल सत्य को प्राप्त नहीं किया। और जब तक हम उस सत्य को प्राप्त नहीं करेंगे तब तक उत्क्रांति याने की evolution की जो चरम सीमा है, उसे हमने प्राप्त नहीं की। उसे प्राप्त किए बगैर हम कभी भी शान्ति से, समाधान से, सुख-चैन से रह नहीं सकते। संसार के जितने भी प्रश्न हैं अधिकतर मनुष्य ने ही खड़े किये हुए हैं। इस मनुष्य के परिवर्तन के लिए श्री गणेश का बहुत कार्य है। बड़ी मेहनत करते हैं। इनके गण हैं, इसलिए उनको गणपति कहा जाता है और ये हर समय माँ की सेवा में लगे रहते हैं और हर जगह, जहाँ जरूरत है वहाँ तुरंत दौड़ के जाते हैं। उस स्तर को स्थापित कर सकते हैं जिसकी महिमा शास्त्रों ने गाई हुई है। कोई कठिन बात नहीं है। और इसके लिए सिर्फ हमें सज्ज होना है। हमें शुद्ध इच्छा रखनी चाहिए कि हम इसे प्राप्त करेंगे। ये कोई झूठी बात नहीं है, ये कोई ऐसी बात नहीं है जिससे किसी को भुलावा डाला जाए, किंतु ये बात सत्य है और इसे हमें प्राप्त करना चाहिए। हम श्री गणेश को नमस्कार करते हैं। लेकिन ये नहीं सोचते कि श्री गणेश क्या है ? हमारे अन्दर कहाँ स्थित हैं ? क्या कार्य करते हैं ? और इन से हमें क्या क्या प्राप्त करना है ?

दूसरी चीज़, हमें प्राप्त करनी है वो है सुबुद्धि, जिसे wisdom कहते हैं। श्री गणेश में इतनी सुबुद्धि और इतना प्रेम है कि वो जानते हैं कि आप लोग गलती कर रहे हैं, वो जानते हैं कि आप में कुछ दोष है, लेकिन छोटे बच्चे जैसे क्षमा कर देते हैं हर एक चीज़ को। उनको मालूम नहीं किसी से नाराज होना। इसी प्रकार वो आपको बहुत क्षमा करते हैं। किसी हद तक काफी क्षमा कर देते हैं। पर जब आप हद से गुजर जाते हैं तब वो जरूर नाराज हो जाते हैं।

तो उनको सिर्फ मानना, मंदिरों में जाना और उन पर पैसे चढ़ाना, उनको पैसे-वैसे कुछ समझ में नहीं आता। अगर कुछ चढ़ाना है तो अपने हृदय को चढ़ाना होगा। और उस गणेश को अपने हृदय में बसाना होगा। जब तक वो हमारे हृदय में नहीं आएंगे हमारा जीवन पवित्र नहीं होगा और उस पवित्रता के कारण जो हमें आशीर्वाद मिलने है वो नहीं मिलते।

इसके अलावा उन में ये भी शक्ति है कि वो दुष्टों का संहार कर सकते हैं। अगर कोई आपको तंग करे, तकलीफ दे तो वो आप के आसपास लगे रहते हैं। बड़े चमत्कार सहजयोग में हुए हैं। अनेक लोगों ने बताया कि न जाने उनके अनेक प्रश्न थे वो एकदम से हल हो गए। श्री गणेश जी इस तरह से काम करते हैं कि समझ में नहीं आता वो किस तरह से काम करते हैं? और उस में कोई भी त्रुटि नहीं रह जाती। इतने बड़े श्री गणेश अगर हमारे साथ हैं तो फिर हमें डरने की क्या बात है, घबराने की क्या बात है। सिर्फ हमें गणेश को वरण करना है और अपने अन्दर उन्हें स्थापित करना है। ये चीज़ कितना भी समझाने से नहीं होगी। ये तो जब आप महसूस करेंगे इसको, उसके बारे में जब बोध होगा आपको, तब आप समझेंगे कि श्री गणेश कितने महत्वपूर्ण है।

यहाँ जो विदेशी लोग बैठे हुए हैं उन्होंने श्री गणेश का 'ग' भी नहीं सुना। उनको मालूम भी नहीं था, पर ये हर समय श्री गणेश की स्तुति करते हैं क्योंकि उनकी स्तुति करने से उनको अनेक लाभ हुए हैं और आप लोग जो यहाँ आए हुए हैं सब आप आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त हों और उस श्री गणेश को हृदय में रखो जिसकी आज पूजा होने वाली है।

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## ENGLISH TALK

I've been telling them about Shri Ganesha, how important it is to worship Shri Ganesh. Now, you know through photographs and all that - that it's a living deity, and it is on Mooladhara. He is actually the chancellor of all the universities, I would say, in the sense that He is sitting on all the chakras. Without Him, nothing can work out, because He is the one who is holiness. So wherever the Kundalini goes, it is He who pours the holiness and the cleansing power of Shri Ganesha cleanses your chakras.

So it is very important to understand the virtue of Shri Ganesha, how He works within your chakras and how He helps you. We may worship Him; just we may sing His praise and all that, but we should also think what qualities we have got from Him of great chastity, great purity, also of wisdom. We have to understand that our wisdom is not something that could be inculcated. It cannot be something that can be maneuvered. It is something very innate thing and it comes through our maturity.

So this maturity can only come through the proper attention to your Kundalini, to fixing up your Kundalini with the all-pervading power. This has to be done through regular meditation. It's not a ritual, but it should be done whenever you feel like, and after sometime you'll find that you are all the time in meditation. You don't have to even meditate, but you are in meditation.

His style is so great that it has no words to be described. But only thing I would like to say that He is a little child. He is an eternal child and the eternal childhood gives Him that innocence of a child. We cannot force ourselves to be innocent because we have grown and we have learned lots of cunning things. But when the Kundalini starts rising and She starts blessing our chakras, automatically we start thinking our innocence has come back. Now we have got innocent heart, innocent mind and innocent love. This simple innocent personality is the sign of a good Sahaja Yogi. And then he also knows, for definite through his experience, that he's looked after by the ganas of Shri Ganesha. Whether you are in Russia or in England or in India, they're all over and the way they are watching you and the way they guide you and the way they help you, you have these experiences and you know that how many people have written about their experiences that we could not even compile them in a book.

But all these ganas are there and they are so kind and so nice, but apart from that, they are also watching you. They're seeing how is your behavior. If you try to take advantage of Sahaja Yoga by any chance, it may be punished, it may act against you. I have warned you many times not to exploit Sahaja Yoga for your advantage. It is for the advantage of others and not for your advantage. You already have got your own Realization. But exploitation should not be there at all. On the contrary, the enjoyment of Sahaja Yoga is the best way to know Sahaj Yoga. So far we have had some bad experiences, but very, very few. Surprisingly, people who have never known even the first word: "Ga" of Ganapati, have become such devoted bhaktas of Shri Ganesha and they have understood the importance of innocence and of purity.

I'm rather sad today that all the Sahaja Yogis are now going away to their countries and I wish them that they carry this purity of Shri Ganesha with them, which is very much required in your countries, very much to be spread out. Only you have to desire and it will spread. I am sure things will change very soon and you'll have a much better, much better time. Moreover, I am sure also there are many people who think and who are seeking this truth and they're seeking also this purity. So only thing what you have to do is to find out, find out as to which people are those which are just striving to

seek the truth. Try to find them out, it's very easy to find them out, and, also, after finding them out, do not argue with them, just give them Realization, let them feel the vibrations and then things will be better. There are many, many things which are false in this world. Lots of things are full of falsehood - doesn't matter. All this falsehood, everything can be easily cleared out by the Truth, the light of the Truth.

So today is - Shri Ganesha's temple is here, so we'll do Shri Ganesha's worship first and then the Devi's worship. I hope you people will say all the Atharva Sheersha and everything.

May God bless you all!

I hope you have enjoyed the Tour very much and now you are going with such good vibrations. Carry them to your own countries and give My love to all the Sahaja Yogis who have not come.

May God bless you all!

# MARATHI TRANSLATION

## (Hindi Talk)

सारांश (Excerpt)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

श्री गणेशाची आराधना करणे फार महत्वाचे आहे. आयचेवातून यंत्रे तुम्हाला कळले आहे की, ते जागृत दैवत आहेत. ते मुलाधाराचा आहेत, जरी गरी पाहील तर, ते सर्व चक्रावर बसले आहेत. त्यांच्याशिवाय काहीही करण्याचीत होत नाही. कारण ते मणजेच, पावित्र्य आहे, कुडलीनी मिथे जाते, तिथे तैय आहेत, जे पावित्र्य ओततात. आणि त्यांची स्वच्छता काय्याची शक्ती ही तुमच्या चक्रांना स्वच्छ करते. श्री गणेशाचे सदगुण जाणणे, हे काय महत्वाचे आहे. त्याशिवाय कशाप्रकारे ते तुमच्या चक्रांमध्ये कार्य करतात. आणि कशाप्रकारे तुम्हाला मदत करतात, ते देखील त्यांची दुसरी महान श्रुद्धा, पावित्र्य आणि समबोधित मुक्तता यासाठी उपसना करता कामा नये, तर आपल्याला हे समजावून घेतले पाहिजे की, मुक्तता "विशुद्ध" हे काहीतरी मनावर बिंबवता येईल, असा नाही. त्याला सुलीने, इतकेच वाचून मिळविता येत नाही ते काहीतरी, ते फार अंतर्दामीचे आहे. आपल्या परीपक्वतेमधून ते घेत असते. आणि ही योग्य परिपक्वता, तुमच्या कुडलीनीवरचे तुमचे बोध सध्या, तुमची कुडलीनी सक्रियतेसाठी अध्यान साधून ठेवणे पाह्यामधून येते. ते जर्मिनीड गळे. पण जेव्हा तुम्हाला ते करावसं यावतं. त्यावेळी ते केले पाहिजे. आणि फोडी वेळाने तुम्हाला समजेल की तुम्ही सतत ध्यानात आहात.

ते महान बाळक आहे. आणि चिरंतन बाळक आहे त्यामुळे त्याला

बाळकाची अर्बोचिन्ना मिळते. त्यावेळी कुडलीनी उत्तमान पावून आपल्या यक्षांना आशिर्वादित करते. आपोआप आपल्याला वाटू लागते की, आपली अर्बोचिन्ना परत आली आहे. आपल्याकडे अर्बोचिन्ना इतके, अर्बोचिन्ना मन आणि अर्बोचिन्ना प्रेम आहे. सार्ध, अर्बोचिन्ना व्यक्तीमध्ये ही सहजयोग्याची धूनी आहे. ज्याला हे मुला माहीत असते, की श्री गणेशाचे गण त्याची छाळणी घेत आहेत. हे गण सतत तुमची कळणी घेत असतात. पण त्याशिवाय त्यांचे तुमच्यावर पूर्ण सध्या असते. तुमच्या वागण्यावर दुरी लक्ष असते. तुम्ही सहजयोग्याचा फायदा घेऊ पडले तर, ते तुम्हाला शिक्षा करू शकतात, ते तुमच्या विरोधात कार्य करू शकतात. मी तुम्हाला जनेकदा श्रुतता देला आहे. तुम्हाला फायद्यासाठी सहजयोग्याचा अयोग्य फायदा घेऊ नका. तो इतरांच्या हितासाठी आहे.

अनेक लोक आहेत, जे सत्याला शोधत आहेत. कोण सत्याला शोधत आहेत, ते तुम्ही ओळखून काढले पाहिजे. आणि त्यांना शोधण्यावर त्यांच्या बरोबर वादविवाद पाडू नका. मुरतं त्यांना आत्मसाक्षात्कार या. त्यांना काव्येशन समजू द्या. तर गोष्टी चांगल्या घडतील. या जगात अनेक असल्या गोष्टी आहेत. हरकत नाही. ते सारे असले सत्याने सहज स्वच्छ केले जाईल.

"ईश्वर तुम्हाला आशिर्वाद देवा".